shardhanjali1:arunjaity.qxd 9/26/2010 8:15 PM Page 72

ॐ

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

"समिधा" संघ कार्यालय, ई-2/187, महावीर नगर, भोपाल-462016

दूरभाष (0755) 2410004 फैक्स नं. 2421055, अणुडाक : (email) kssudarshan2009@rediffmail.com

कुप्.सी. सुदर्शन

तिथि : चैत्र कृष्ण प्रतिपदा
कलियुग-5111

दिनांक 01.03.2010
भोपाल

शोक श्रद्धांजलि

चंडिकादास अमृतराव देशमुख याने अपने "नानाजी देशमुख" के दिनांक 27 फरवरी के देहावसान का समाचार सुनकर उन समस्त लोगों का शोकसंतप्त होना अत्यंत स्वाभाविक है जिन्होंने उनके चुंबकीय व्यक्तित्व के आकर्षण का अनुभव किया। माता-पिता दोनों का साया उनके पैदा होने के कुछ दिनों बाद ही हट गया था और अत्यंत दारिद्रय में जीवन-यापन कर रहे उनके मामा-मामी ने किसी प्रकार प्राथमिक विद्यालय की शिक्षा दिलाई। उनकी पढ़ने की ललक ने उन्हें भाजीपाला बेचने जैसे छोटे-मोटे कार्य करते हुए भी मैट्रिक तक की शिक्षा प्राप्त करने की प्रेरणा दी। किन्तु इस प्रक्रिया में उन्होंने जाना कि भूख की ज्वाला क्या होती है और इस अनुभव ने उन्हें परदु:खकरतर बना दिया जो उनके स्वभाव का अनिवार्य अंग बन गया और जब संघ-संस्थापक डाक्टर हेडगेवार के संपर्क में आए तो न केवल संघ के स्वयंसेवक बन गये अपितु उनके निधन पर अपना समग्र जीवन समाज और राष्ट्र की सेवा में लगाने का संकल्प ले लिया। प्रचारक बनकर अपने संगठन-कौशल्य से ने केवल सहस्त्रावधि युवकों को स्वयंसेवक बनने के लिए प्रेरित किया तथा उस जिले में संघ शाखाओं का जाल बिछाया अपितु उनमें से कुछ को प्रचारक बनने के लिए प्रेरित किया।

सन् 1947 में जब मासिक राष्ट्रधर्म, साप्ताहिक पाञ्चजन्य और दैनिक स्वदेश प्रारंभ होने पर पं. दीनदयाल जी उपाध्याय, नानाजी देशमुख तथा अटल बिहारी वाजपेयी का त्रिवेणी संगम हुआ तो राष्ट्रजीवन को पावन करने हेतु एक ऐसी पावन वैचारिक धारा बही जो आज राष्ट्र के राजैतिक जीवन में शुचिता, पारदर्शिता तथा जन-समस्याओं के प्रति जागरूकता लाने हेतु बद्धपरिकर है। पाश्चात्य राजनैतिक प्रणाली की अनुपयुक्तता और अपरिणामकारकता को एक बार उन्होंने लोकसभा के सदस्य तथा एक बार राज्यसभा के सदस्य रहकर भली-भाँति जान लिया था और इसलिए दलगत राजनीति से सन्यास लेकर समग्र ग्राम विकास के कार्य में अपने-आपको झोंक दिया और अनेक जिलों में कार्य करते हुए अन्त में चित्रकूट में एक सर्वांगपरिपूर्ण, समृद्ध, आत्मनिर्भर तथा देश की सांस्कृतिक परम्परा के अनुरूप विकास का नमूना खड़ा कर दिखाया और वहीं पर उन्होंने सुखपूर्वक अंतिम साँस ली। यही नहीं, इस नवदधीचि ने अपनी काया का भी समर्पण कर हमें संदेश यही दिया-

किंतु अपनी देह को भी देह अपनी कह न पाई ।
राष्ट्रनौका की वही पतवार बनना है हमें तो ।।

कुप्. सी. सुदर्शन

नाना, तुझे प्रणाम

नईदुनिया

अंतिम दर्शन

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने रविवार को नई दिल्ली के केशव कुंज में स्वर्गीय नानजी देशमुख की पार्थिव पर पुष्पचक्र अर्पित किया।

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री

मध्य प्रदेश शासन
भोपाल-462004

संदेश

नानाजी देशमुख के निधन से देश ने एक समर्पित राजनेता एवं समाजसेवी को खो दिया है। नानाजी के निधन से रिक्त स्थान की पूर्ति संभव नहीं है। वे हम सभी के आदर्श थे।

सक्रिय राजनीति को तिलांजलि देकर उन्होंने देश की राजनीति में एक आदर्श उपस्थित किया है। इसके बाद दीनदयाल शोध संस्थान के माध्यम से उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में भारतीय परंपराओं के संरक्षण और संवर्धन के लिए अपना शेष जीवन समर्पित कर दिया।

कृषि, चिकित्सा, जैविक खेती, जल संरक्षण ग्रामीण विकास, पंचायती राज और अनेकानेक क्षेत्रों में भारतीय परंपराओं के संरक्षण और संवर्धन के लिए उन्होंने उत्तर प्रदेश के गोंडा जिले और उसके बाद मध्य प्रदेश के प्रसिद्ध तीर्थस्थल चित्रकूट क्षेत्र को अपनी कार्यस्थली बनाया।

यह हमारा सौभाग्य रहा कि उन्होंने दीनदयाल शोध संस्थान के माध्यम से हमारे प्रदेश के चित्रकूट क्षेत्र में अनेकानेक प्रकल्प संचालित किए। उनकी प्रेरणा से मध्य प्रदेश में देश के पहले ग्रामीण विश्वविद्यालय को भी स्थापना हुई।

स्वर्गीय नानाजी ने राष्ट्रसेवा की शुरूआत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माध्यम से की थी। स्वर्गीय नानाजी ने अपने आदर्शो से राजनीति और समाजसेवा के क्षेत्र में एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। उनके जीवन से प्रेरणा लेकर हम देश की राजनीति में सुधार ला सकते हैं और देश को तेजी से आर्थिक विकास की ओर ले जा सकते हैं।

आज इस अवसर पर मैं मध्य प्रदेश शासन तथा मध्य प्रदेश की साढ़े छः करोड़ जनता की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

(शिवराज सिंह चौहान)